परिशिष्ट 13 (संगति)

मसीही कलीसिया में कार्य व उसका प्रारूप

मसीही समाज (कलीसिया) के कार्य व प्रारूप के बीच क्या भिन्नता है, जो कलीसिया के लोगों को एक दूसरे से अलग बना देते हैं?

1. कार्य व विविधिता ।

खोजें और चर्चा करें। मसीही कलीसिया (समाज)को किस प्रकार से कार्य करना चाहिए?

(1) मसीह की कलीसिया (समुदाय) के सदस्यों को विविधता स्वीकार करनी चाहिए।

पढ़ें। रोमियों 12:4-8; 1 कुरिन्थियों 12:4-7,18,28।

ध्यान दें। हालांकि मसीह की एक ही देह है अर्थात एक सार्वभौमिक कलीसिया, लेकिन फिर भी उसके बहुत से अंग हैं। यह विविधता संसार भर में बहुत सी भाषा,गोत्रों, जातियों और संस्कृतियों के होने की वजह से है(प्रकाशितवाक्य 5:9)। यह विविधता बहुत प्रकार के आत्मिक वरदान ,विशेष कार्य (कार्यालय), लक्ष्य(सेवकाईयां) और देह में अलग अलग स्थान होने की वजह से भी है।

वरदान। मसीही समाज या कलीसिया के सदस्यों के बीच में फरक उनको दिये गये साधारण या असाधारण वरदानों की वजह से आता है(1 कुरिन्थियों 3:5;12:4)

लक्ष्य। मसीही कलीसिया को परमेश्वर द्वारा दिये गये लक्ष्य (सेवकाईयां)(1कुरिन्थियों 12:4,28; मरकुस 13:34) व मसीह की देह में होकर पवित्र आत्मा द्वारा प्रगट किये जाने काम(1कुरिन्थियों 12:5-7)भी अलग होते हैं। उदाहरण के तौर पर, मान लिजिए दो मसीहियों ने शिक्षा देने के आत्मिक वरदान को प्राप्त किया है। उसमें से एक व्यक्ति को तो परमेश्वर ने बच्चों के बीच में शिक्षा देने के लिए बुलाया है, जबकि दूसरे व्यक्ति को परमेश्वर ने व्यस्कों के बीच में शिक्षा देने के लिए बुलाया है। एक मसीह अपनी शिक्षा देने की योग्यता को सुन्दर दृष्टान्त बनाने या अच्छी कहानियों को सुनाने के द्वार प्रगट करता है तो दूसरा मसीही अपनी योग्यता को व्यस्कों के बीच में बाइबल अध्ययन की अगुवाई करने के द्वारा प्रगट करता है।

स्थान। मसीही की कलीसिया के सदस्य कलीसिया में उनको दिये गये स्थान की वजह से एक दूसरे से अलग होते हैं(1 कुरिन्थियों 12:18)। मान लीजिए कि दो मसीहियों को दया करने का आत्मिक वरदान प्राप्त हुआ। परमेश्वर ने एक व्यक्ति को मण्डली में गरीब सदस्यों की सहायता करने के लिए बुलाया, और दूसरे को कलीसिया के गरीब, नेत्रहीन और विकलांग सदस्यों और परदेसियों की सहायता करने के लिए बुलाया।

एकसमानता। आत्मिक एकसमानता एक असिद्ध मण्डली में बहुत सी कभी न भरी जाने वाली दरारों को उत्पन्न कर देती है। यदि कलीसिया के सारे ही लोग शिक्षक हो गये तो दया प्रगट करने का काम कौन करेगा? इसके अलावा एकसमानता होने के कारण कलीसिया की एकता विखण्डित हो जाती है, क्योंकि एक समानता होने के कारण कलीसिया में बहुत से लोगों को काम करने या सेवा निभाने(आत्मिक वरदान, कार्य या सेवकाई)करने का बिल्कुल भी मौका प्राप्त नहीं होता। सामाजिक एकसमानता से भेद भाव उत्पन्न होता और गरीबों व अशिक्षित लोगों का बहिष्कार होता ह(याकूब 2:10)। जातीय एकसमानता से जातीय बहिष्कार उत्पन्न होता है(प्रेरितों 10:9-16, 28,34-35)। सांस्कृतिक एकसमानता न केवल लोगों को दूसरी भाषा और संस्कृति के लोगों से अलग या ही नहीं रखती, वरन वे अपनी पृष्ठभूमी से विरासत में मिली पापमय संस्कृति व आचरण का बलपूर्वक लगातार अभ्यास करते हैं, उदाहरण के तौर पर, हुक्म चलाते हुए अगुवाई करना, माता पिता व अपने से बढ़ों से बेमतलब आज्ञापालन करवाना, और बाइबल की स्पष्ट शिक्षाओं की बजाय सांस्कृतिक परम्पराओं को मानना(मरकुस 7:15-23)।

विविधता। एक सच्ची मसीही कलीसिया(समाज)(सार्वभौमिक कलीसिया या स्थानीय कलीसिया) पहिचान उसकी एकसमानता नहीं है, वरन उसमें पायी जाने वाली विविधता है(1 कुरिन्थियों 12:14-20)। आत्मिक विविधता वास्तव में एकता की ओर अगुवाई कर सकती है, क्योंकि हर एक मसीही की सेवा आवश्यक है और हर एक मसीही को दूसरे मसीही की सेवा की जरूरत पड़ती है (1 पतरस 4:10-11)। सामाजिक विविधता से आपस में अपनी बातों को बांटने का अवसर प्राप्त होता है, धनी व्यक्यि अपने काम करने के उपाय बता सकता है और गरीब आदमी अपने विश्वास के बारे में(याकूब 2:5)।जातीय विविधता किसी लक्ष्य को पूरा करने की सम्भावनाएं उत्पन्न करती है(प्रेरितों 8:27-31; 10:24-28,34-35)। सांस्कृतिक विविधता, मसीह की देह में एकता को प्रदर्शित करने की सम्भावनाएं उत्पन्न करती है(1कुरिन्थियों 12:12-13)। सार्वभौमिक कलीसिया केवल तभी अपने कार्यों को पूरा कर सकती है जब उसके सारे अंगों पर उसका अधिकार हो। और सार्वभौमिक कलीसिया तभी वह बन सकती है जब सारे अंग उसके सिर अर्थात यीशु मसीह की अधीनता में होकर चले।

(2) मसीही कलीसिया (समाज) को आपस में एक दूसरे पर निर्भर होना चाहिए।

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 12:21-27

ध्यान दें। मसीही कलीसिया में (समाज) हीन भावना या घमण्ड करने और आपस में तुलना करने का कोई स्थान नहीं है। क्योंकि आंख को कान और हाथ को पैरों की जरूरत होती है। मसीह की देह को सुचारू रूप से काम करने के लिए अपने प्रत्येक अंग का काम करना बहुत जरूरी है। हर एक जन को आगे बढ़कर एक दूसरे की चिन्ता करने की जरूरत है। इसका अर्थ है कि प्रत्येक अंग को एक दूसरे के प्रति जिम्मेदारी को पूरा करना चाहिए। उन्हं केवल अपनी ही स्थानीय कलीसिया की जिम्मेदारियों को ही नहीं बल्कि मसीह की सार्वभौमिक देह के प्रति जिम्मेदारियों को भी पूरा करना चाहिए।

2.कार्य व प्रारूप

(1) मसीही कलीसिया का ऐतिहासिक प्रारूप

पढ़ं प्रेरितों के काम 2:42-47; 4:34-35; 6:1-7; 10:47:48; 1 कुरिन्थियों 11:17-22; 2 कुरिन्थियों 13:12; 1 तीमुथीयुस 2:8

खोजें व चर्चा करें। बाइबल में मसीही कलीसिया के किस तरह के प्रारूपों के उदाहरण दिये गये हैं।

ध्यान दें। मसीही कलीसिया को अपने कार्य उचित व समयकालीन प्रारूपों में प्रगट करना चाहिए।

- यरूशलेम में प्रथम मण्डली सप्ताह(प्रेरितों 20:7) में एक बार मिलने की बजाय प्रतिदिन संगति किया करते थे(प्रेरितों 2: 46)।
- वे घर(रोमियों 16:5) में मिलने की बजाय मन्दिर के प्रांगण(प्रेरितों 2542-46) में मिला करते थे।
- वे अलग से प्रभु भोज की सभा आयोजित करने की बजाय(1कुरिन्थियों 11:17-22), प्रभु भोज की विधी को अपने घरेलू भोजन के साथ शामिल लिया करते थे(प्रेरितों 2:42-46)।
- उन्होने नियमित तौर पर चन्दा लेने की बजाय(1 कुरिन्थियों 16:1-2) जरूरतमन्द लोगों के बीच में अपनी बढ़ती को साझा करने के द्वारा (प्रेरितों 2:44-45 4:34-35)अपने दान को प्रगट किया।
- उन्होने अपनी अनापेक्षित समस्याओं को साधारण विश्वासियों के ऊपर डालने(मरकुस 13:34; 1पतरस 4:10-11) की बजाय उन समस्याओं से निपटने व उन चुनौतियों(प्रेरितों 6:1-7) का सामना करने के लिए डीकनों को नियुक्त करने की इच्छा को व्यक्त किया।
- मसीह के अनुयायियों ने नये विश्वासियों को नदी में बपतिस्मा देने की बजाय(मरकुस 1:4-8) घरों में(प्रेरितों 9:17-18; 10:47-48;22:16) ले जाकर बपतिस्मा दिया।
- वे पवित्र चुम्बन के साथ एक दूसरे का अभिवादन किया करते थे(2 कुरिन्थियों 13:12)
- वे ज़्यादातर अपने हाथों को उठाकर पुराने नियम की प्रार्थना की विधी का ही इस्तेमाल किया करते थे(1तीमुथीयुस 2:8;भजन 134:2)

ध्यान दें कि इन सारी बातों के बावजूद भी कहीं पर भी बाइबल में मसीहियों को इन प्रारूपों या तरीकों का अनुसरण करने की शिक्षा या आदेश नहीं दिया गया। बाइबल में कहीं पर भी मसीहियों को इस प्रकार के तरीकों का इस्तेमाल करने पर कोई ज़ोर नहीं डाला गया है!

(2) ऐतिहासिक तरीके जो बाद में कार्यों के रूप में बदल गय।

पढ़ें मत्ती 15:1-9; 23:25-28; गलातियों 6:12-16;

खोजें व चर्चा करें। कौन से वे बाइबल आधारित तरीके या प्रारूप है जो बाद में कार्यों में तबदील हो गये?

ध्यान दें। सार्वभौमिक कलीसिया को उनकी परम्पराओं को कलीसिया की बुनियादी क्रिया या विधी न बनाने चेतावनी दी गयी है। मसीही लोग बाइबल का खण्डन करने वाली अपनी सांस्कृतिक विधियों को अपनी कलीसिया में लागू नहीं कर सकते। उदाहरण के लिए :

मसीही लोग अपने परिवार में पहले से पायी जाने वाली भूत सिद्धि की प्रथा को कलीसिया में लेकर नहीं आ सकते(व्यवस्था विवरण18:0-13)

यदि कोई प्रारूप लगातार बाइबल में पाये जाने वाले प्रकाशन का उल्लघन करता है, तो मसीही लोग उस परम्परा या विधी का लम्बे समय पकड़कर नहीं रह सकते। मसीही लोगों हर एक उस प्रथा का इनकार करना चाहिए जो परमेश्वर के वचन का खण्डन करती है। उदाहरण के लिए फरीरियों में दिखावटी प्रारूपों या विधियों को(खाना खाने से पहले हाथ धोना, प्लेटों व कपों का धोना,खतना इत्यादि) अनिवार्य कार्य के रूप में ठहरा दिया है।

- प्राचीनों का एक परिषद होने की बजाय(प्रेरितां 20:17,28;1तीमुथीयुस 4:14), मण्डली का एक प्रधान अगुवा होना (3यूहन्ना 9-11) बाइबल की शिक्षा को स्पष्ट रूप में खण्डन करना है।
- दूसरा उदाहरण बपतिस्में के विशेष तरीके को एक विधी के तौर पर ठहरा देना जबकि बाइबल में इस प्रकार की किसी विधी

के बारे में नहीं बताया गया है।

- जब इन रीति रिवाजों का कोई मायना ही नहीं है तो मसीहियों को इन परम्पराओं को पकड़े नहीं रहना चाहिए। यीशु मसीह ने दिखाने के लिए काम करने के लिए मना किया है(मत्ती 23:25-29)।
- हालांकि सारे मसीही काम किसी न किसी तरह से तो प्रगट होते ही हैं लेकिन मसीहियों द्वारा उपयोग किया जाने वाले किसी भी तरीके ने परमेश्वर के वचनों का खण्डन नहीं करना चाहिए(मत्ती 15:1-9), अर्थपूर्ण होना चाहिए,गम्भीरता के साथ प्रगट किया जाए, और किसी मसीही विश्वासी पर उस धारणा या विचार को थोपा नहीं जाना चाहिए।

पौलुस लोगों के सामने अच्छी छवी बनाने के लिए या परम्पराओं का पालन करने वाले लोगों द्वारा सताव से बचने के लिए, दिखाने के काम करने के विरूद्ध चेतावनी देता है। (गलातियों 6:12-16)

(3) ऐतिहासिक प्रारूप जो बाइबल पर आधारित था और जिसे सारी जातियो की संस्कृति ने उचित तरीके से स्वीकार किया।

पढ़ें प्रेरितों 10:22,24,27; 16:13-16; 16:29-34;17:1-4; (प्रेरितों 18:7-8;19:8-10)।

खोजें और चर्चा करें। समय के अनुसार कौन सा प्रारूप बाइबल के अनुसार उचित व स्वीकार करने योग्य होगा(अर्थात देश की संस्कृति से मेल खाया हुआ)?

ध्यान दें। मण्डली ने अपने कार्यों को बाइबल आधारित तरीके से ही करना चाहिए लेकिन उसके साथ साथ उसे ऐसे तरीकों को अपना चाहिए जो बिना परमेश्वर के वचन का खण्डन किये उस देश के अनुकूल हो।

- एक समूह जिनके बीच में सक्रिय आपसी रिश्ता में सामान्यता हो(प्रेरितों 10:24,27)। सूबेदार, कुरनेलियुस ने प्रेरित पतरस को अपने घर पर वचन सुनाने के लिए बुलाया(ग्रीक: ओईकोस) और उसने एक ही जगह पर अपने रिश्तेदारों और अपने घनिष्ठ मित्रों को इकट्ठा कर लिया। कुरनेलियुस के घर में जमा हुई अन्यजाति के लोगों की बढ़ी संख्या ही अन्याजियों के बीच में पहली मसीही मण्डली या समाज बन गयी(घरेलू कलीसिया)। आपके किन दोस्तों, परिवार के सदस्यों या पड़ोसियों और सहकर्मियों को आप अपने घर में परमेश्वर के वचन सुनने के लिए बुला सकते हैं?
- एक समूह जिसका सामाजिक ढांचा सामान्य हो (प्रेरितों 16:13-15,29-34)। प्रेरित पौलुस ने नदी के तट पर प्रार्थना के लिए जमा हुए लोगों के बीच में प्रचार किया। लुदिया यूरोप में मसीह पर विश्वास करने वाली पहली विश्वासी बनी। उसके घराने के सारे लोग (ग्रीक: ओईकोस) मसीह के अनुयायी बन गये(प्रेरितों 16:13-15)। पौलुस ने बन्दीगृह के दारोगा को भी वचन सुनाया। वह दारोगा अपने पूरे परिवार सहित (ग्रीक : पानोईकेई) मसीह का अनुयायी बन गया(प्रेरितों 16:29-34)।
- एक परिवार या घराना(आईकोस) एक ऐसे लोगों को समूह है जिनकी सामाजिक संरचना सामान्य हो, जिसमें उनका एक साथ एक ही स्थान में रहना, एक साथ काम करना(ज्यादातर मालिक और नौकर) और एक साथ अराधना करना शामिल होता है। आपके क्षेत्र में कौन से वे लोग हैं जो इस प्रकार से परिवार या घराने का निर्माण करते हैं?(विद्यार्थी, सैन्य अधिकारी, ठेकेदार, नव विवाहित जोड़े, फैक्ट्री में काम करने वाले, आदिवासी लोग या अल्पसंख्यकों को समूह, इत्यादि)। इन में से किन परिवार या घरानों तक आप सुसमाचार को लेकर जा सकते हैं?
- ऐसा समूह जिसका रूची एक ही हो (प्रेरितों 17:1-4)। जैसा कि पौलुस की रीति थी, वह लगातार कुछ सप्ताह तक स्थानीय अराधनालय में बाइबल की बातों पर चर्चा करने के लिए लगातार मिलता रहा। उसका मकसद उन्हें मसीह के अनुयायी बनने में सहायता करना था। आप कौन से रूची रखने वाले समूह को किसी चर्च, या किसी अन्य धार्मिक स्थल या किसी अन्य स्थान पर बाइबल में दिये गये सुसमाचार पर चर्चा करने के लिए एकत्रित कर सकते हो?

(4) प्रारूपों के लिए निर्देश।

खोजें व चर्चा करें। किन निर्देशों के आधार पर हम एक ऐसे प्रारूप का गठन कर सकते हैं जिसे मसीही मण्डली चुन सके?

ध्यान दें।

आत्मा व सत्य (यूहन्ना 4:19-24)। यीशु मसीह ने यह घोषणा की कि वह समय आ गया है कि हम आत्मा और सच्चाई से की जाने वाली आराधना के हर प्रारूप का इस्तेमाल करे सकें(यूहन्ना 4:19-24)। जिस भाव में होकर मसीहियों की आत्मा परमेवश्वर की आराधना करती है वह दूसरों को अपनी आराधना दिखाने (यशायाह 1:13-15)।वह दूसरों को क्षमा करने के द्वारा, अपने जीवन को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करने के द्वारा और, अपने जीवन को अर्पित करके, वह परमेश्वर की पहिचान व उसके कामों पर ध्यान करने के द्वारा परमेश्वर की आराधना किया करता था। जिस स्वभाव के साथ मसीही जन का मन परमेश्वर की आराधना करता है वह उस सत्य से सहमत होना चाहिए जिसे बाइबल में प्रगट किया गया है।

बाइबल (1 कुरिन्थियों 4:6)। यहां पौलुस अपने व अपने सहकर्मियों के ऊपर एक नियम को लागू करता है," लिखी हुई बातों से

कभी आगे न बढ़ना"। बाइबल में जो भी कुछ लिखा है वह यह प्रगट करता है कि बाइबल एक प्रगतिशील प्रकाशन है। पुरानी वाचा को नयी वाचा के द्वारा पूरा किया गया है (इब्रानियों 8:5-13)। इस कारण से पुराने नियम को हमेशा नये नियम के प्रकाशन में होकर समझाया जाना चाहिए। पुराने नियम के बहुत स काम व भविष्यद्वाणियां पूरी हो गयी है, इस कारण से उन्हें रद्द या समाप्त कर दिया गया है(मत्ती 5:17; कुलुस्सियों 2:14; इफिसियों 2:15)

आचरण व सिद्धान्त। पौलुस ने बहुत ही स्पष्ट रूप से लिखा है कि लोगों को परमेश्वर के भवन में किस प्रकार से व्यवहार करना चाहिए, जा कि जीवते परमेश्वर की कलीसिया व मण्डली है (1 तीमुथीयुस 3:15)। उसने सिद्धान्तों के सन्दर्भ में, सार्वजनिक तौर पर आराधना करने, स्त्री व पुरूषों के बीच सम्बन्धों व मण्डली पर अगुवे नियुक्त किये जाने के सम्बन्ध में,प्राचीनों की जिम्मेदारियों के विषय में, बुजुर्ग महिलाओं जैसे खास समूह के लोगों के विषय में, गुलामों व धनी लोगों के, भक्ति की चाह रखने के विषय में,धार्मिकता, विश्वास, प्रेम, धीरज, भलाई के विषय में निर्देश दिये हैं(1तीमुथीयुस की पत्री)। " सिद्धान्तों के आधार पर अपने जीवन का मूल्यांकर करें"(1 तीमुथीयुस 4:16)।

लाभप्रद व निर्माणकारी(1कुरिन्थियों 10:23)। मण्डली में बहुत से काम अनिवार्य हैं: दूसरों को अनुमति दी जा सकती है, मगर ऐसा होना अनिवार्य नहीं है। हालांकि मण्डली में बहुत सी गतिविधियों या प्रारूपों को हर परिस्थिति में अनुमति प्रदान की जा सकती है, लकिन ऐसा जरूर नहीं है कि वे हर परिस्थिति में लाभप्रद व किसी को मज़बूत बनाने वाली हों।

बुलाहट या निर्धारित कार्य(1 कुरिन्थियों 3:5:15)। हालांकि सार्वभौमिक कलीसिया संगठित रूप में सारे कामों को करती है, लेकिन परमेश्वर की बुलाहट हर एक व्यक्ति के कार्य करने के दायरे को सीमित कर देती है। वह सबको विशेष जिम्मेदारी प्रदान करता है। समपण में विविधता होने के कारण एक निर्धारित काम को अनेकों प्रारूपों में किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, उनकी नींव डालने का काम, सोना,चाँदी या बहुमूल्य पत्थरों जैसी अलग अलग सामर्गी से हो सकता है।

अनुकूल(संस्कृति में ग्रहण योग्य)। परमेश्वर की बुलाहट एक जिम्मेदारी है, लेकिन इसके साथ ही साथ यह राहत भी है, क्योंकि हमें सारे महीमित कामों को अपने आप करने की जरूरत नहीं पड़ती। हमें अपने आप को सीमित करने की अनुमति है। हमे मसीह की देह में किसी और काम को करने की अनुमति है। और हमें पूरी आज़ादी है कि हम उस काम को बाइबल के आधार पर प्रगट कर सकें, बशर्ते वह तरीका सामाजिक तौर पर भी स्वीकार किया जा सके।